ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

उन्नीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीय चेतना का विकास

KEY WORDS:

Priyanka Rai Studied from- jiwaji University

उन्नीसवी शताब्दी में राष्ट्रीय चेतना का उद्भव वस्तुतः , अगेजी शासन का परिणाम था अंग्रेजी शासन ने जो परिवर्तन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में किए जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय समाज का शोषण हुआ यह सत्य हैं भारत में राष्ट्रीयता का उदय एवं विकास अन्य देशों की तुलना में अधिक कठिनाई से हुआ एवं उन परिस्थितियों में हुआ जो राष्ट्रीय विचारों के मार्ग में सहायता प्रदान करने के स्थान पर बाधायें पैदा करती थी। कृषि का वाणिज्यीकरण मुक्त व्यापार की अंग्रेजी नीति, हस्तशिल्प उद्योगों को नष्ट करना आदि कारणें ने भारतीयों को एकजुट किया तथा धीरे – धीरे भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग को यह ज्ञात होने लगा कि उनके हित ब्रिटिश शासकों के हाथों में असुरक्षित है। यह समय सामाजिक एवं बौद्धिक जागरण का काल कहा जाता है जिसमें तत्कालीन समाज का आलोचनात्मक एवं रचनात्क मूल्यांकन कर उसका परिवर्तन आधुनिक आधार पर किया गया इसके विश्लेषण में समकालीन आधुनिक शिक्षा प्राप्त जैसे राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द, एनीविसेन्ट, सर सयैद अहमद खां आदि बुद्धिजीवियों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने एवं वे ब्रिटिश नीति के प्रखर आलोचक बने। तथा अपने विचारों एवं कार्यों से भारतीय जनमानस को प्रभावित कर उनमें आत्मविश्वास की भावना जाग्रत की । इन्होंने 19 वीं शताब्दी में राष्ट्रीय चेतना के उद्भव में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1853–54 में भरत में डाक व्यवस्था स्थापित की गई रेलवे लाइने बिछाई गई, सभी नगरों को तार व्यवस्था से जोड़ा गया एक प्रांत को दूसरे प्रांत से जोड़ने, दूरस्थ स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों से संपर्क स्थापित करने का अवसर प्राप्त हुआ यह भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का प्रमुख कारण बन गया। साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के दौरान भारतीयों में एकजुटता की भावना का उदय हुआ । भारतीयों में राष्ट्रीय भावना जाग्रत करने में स्वयं ब्रिटिश शासन द्वारा उत्पन्न परिस्थितियां जिम्मेदार थी जिसमें कि भारतीय समाज का प्रत्येक वर्ग ब्रिटिश शासन का विरोधी बन चुका था। अंग्रेजी सरकार ने प्रशासन में एकरूपता लाने के लिए पुलिस, सेना, कानून एवं न्याय व्यवस्था स्थापित की परन्तु सरकारी पदों की भर्ती में भारतीयों के प्रति अपनायी जाने वाली भेद–भावपूर्ण नीति ने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की। युवावर्ग ये भेदभाव स्वीकार न कर अपनी आवाज उठाते थे। तथा महानगरों में विभिन्न राजनीतिक संगठनों का गठन हुआ जिससे युवा एवं अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वर्ग संगठित होकर आगे बढ़े । सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने ब्रिटिश आर्थिक शोषण की नीति पर प्रकाश डाला तथा भारत से हो रहे धन के निरन्तर बर्हिगमन को भारतीय जनमानस में ब्रिटिश राज्य के प्रति असंतोष एवं स्वदेश निर्मित वस्तुए एवं राज्य के प्रति प्रेम को जगाया । बिगड़ती आर्थिक दशा तथा सरकार की राष्ट्र विरोधी आर्थिक नीति का , अंग्रेज विरोधी विचारधारा तथा राष्ट्रीय भावना के उद्भव में काफी सहयोग रहा।

विदेशी विद्वानों की खोजो ने भी भारतीयों की राष्ट्रीय भावना को बल दिया । सर विल्यिम जोन्स, मैक्समूलर विद्वानों ने संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध भारतीय ऐतिहासिक ग्रन्थों का अध्ययन कर अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया। इस समय अनेक भारतीय धार्मिक एवं सामाजिक ग्रन्थों का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में हुआ जिससे संस्कृत साहित्य को बहुत प्रोत्साहन मिला पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय कलाकृतियों एवं ग्रन्थों की खोज कर यह मत व्यक्त किया भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व को सभी प्राचीन संस्कृतियों में श्रेष्ठ है। जब भारतीयों को यह ज्ञात हुआ कि पाश्चात्य विज्ञान भारतीय संस्कृत साहित्य को श्रेष्ठ मानते है तो उनमें आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ । यह खोज भारतीयों में चेतना उत्पन्न करने में सफल रही परिणामस्वरूप उनके हृदय राष्ट्रीय भावना एवं देश भक्ति से भर गए । तथा वे अपने भविष्य के प्रति आशावादी बन गए। आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा एवं विचारधारा के प्रसार के फलस्वरूप बहुत बड़ी संख्या में भारतीयों ने जनतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष, तार्किक, राष्ट्रवादी राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाया। अंग्रेजी सरकार द्वारा शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा को निश्चित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का पूर्णरूप से लोप होना एवं एक ऐसे वर्ग का निर्माण हो जों रक्त एवं वर्ण से भारतीय है परन्तु विचार एवं शब्दों से अंग्रेजी हो। इस उद्देश्य में अंग्रेजों को कुछ सफलता भी प्राप्त हुई । शिक्षित भारतीय वर्ग अपनी संस्कृति भूलकर पाश्चात्य संस्कृति अपनाने लगे परन्तु पाश्चात्य शिक्षा से भारत को हानि की अपेक्षा लाभ अधिक हुआ। ढाका, पटना, इलाहाबाद, आगरा, दिल्ली में अंग्रजी भाषा के तर्ज पर कॉलेज खोले गये शिक्षा परिषद की स्थापना की गई । पश्चिमी शिक्षा के साथ महिला शिक्षा को भी व्यापक संरक्षण दिया गया। एवं उचच शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक भरतीय इग्लेण्ड गये वहाँ के स्वतंत्र वातावरण से अवगत हुऐ तथा भारत आकर जनमानस में स्वतंत्रता के प्रति राष्ट्रीय चेतना का विकास किया । भारत के विभिन्न प्रान्तों में भिन्न – भिन्न भाषाये बोली जाती थी। संपूर्ण भारत के लिए एक संपर्क भाषा की आवश्यकता थी, जिसे अंग्रेज सरकार ने अंग्रेजी भाषा लागू कर पूरा किया। इस तरह अंग्रेजी भाषा आपसी विचार विनमय करने एवं राष्ट्र के लिऐ मिलकर कार्य करने में भी सहायक सिद्ध हुई।शिक्षित भारतीयों ने अमेरिका इटली आयरलैण्ड के स्वतंत्रता संग्रामों के संबंध में पढ़ा। वे समकालीन यूरोपीय राष्ट्रवादी गतिविधियों का अध्ययन कर उनका अनुकरण करने के प्रयास भी करने लगे। उन्होने ऐसे लेखकों की रचनाओं का अनुशीलन किया जिन्होने राष्ट्रीय स्वतंत्रता के सिद्धान्तों एवं राष्ट्रीय विचारों का प्रचार किया। पाश्चात्य विचारक रूसों, जॉन स्टूअर्ट मिल, पेन आदि उनके राजनीतिक प्रेरणा स्त्रोत बन गये । अंग्रजी शिक्षा शिक्षित वर्ग के लिए आधुनिक विचारों के प्रसार का स्त्रोत बन गई ।

प्रेस वह प्रमुख साधन था जिसने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । उन्नीसवी शताब्दी में बडी संख्या में समाचार पत्र, पत्रिकायें प्रकाशित हुई राष्ट्रवादी भारतीयों ने अनेक सरकारी प्रतिबंधों के बावजूद देशी तथा अंग्रेजी भाषा में समाचार पत्र प्रकाशित किए। उनके पन्नों पर सरकारी नीतियो की आलोचना होती थी देश के विभिन्न भागों में रहने वाले राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं से परस्पर विचारों का आदान – प्रदान करने में प्रेस की अहम भूमिका रही। वही विभिन्न साहित्यकारों जैसे बंग्ला में बकिमचन्द्र चट्टोपाधयाय तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर , मराठी में विष्णू शास्त्री, तमिल में सुब्रमण्यम भारती और हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आदि ने अपने उपन्यासों , निबंधों तथा देशभक्ति से भरे लेखों के रूप में इन साहित्यिक कृतियों ने भारत वासियों के हृदयों में सुधार एवं जाग्रति की अपूर्व उमंग उत्पन्न कर दी । लॉर्ड रिपन द्वारा 1883 ई. में इल्वर्ट बिल लाया गया जिसके तहत न्यायिक क्षेत्र में अंग्रेजों एवं भारतीयों के बीच विभेद को समाप्त करने का प्रावधान था। जिससे भारतीयों में एकता की भावना का विकास हुआ तथा राजनीतिक चेतना का प्रसार हुआ। इस राष्ट्रवादी चेतना का चरमोत्कर्ष 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के रूप में सामने आया इस संस्था के उद्देश्य जनप्रिय मांगों को सरकार के समक्ष प्रस्तुत करना , राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करना, विभिन्न क्षेत्रीय राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना था। इस संस्था को स्थापित करने का अंग्रेजों का मूल उद्देश्य कुछ भी रहा हो पर राष्ट्रवादियों को इकट्ठा करने, आपसी सहयोग के लिए यह मंच उत्तम प्रयास रहा । इसके अलावा अंग्रेजों द्वारा अपनाई गई रंगभेद की नीति राष्ट्रीय भावना को जगाने में सहयोगी रही । यह भेद केवल सामाजिक व्यवहार तक सीमित न होकर न्यायिक क्षेत्र तथा हर क्षेत्र में प्रयोग की जाती थी एक ही अपराध के लिये भारतीयों एवं अंग्रेजों के लिए अलग – अलग दण्ड निर्धारित थे। तथा भारतीयों को हीन भावना की दृष्टि से देखा जाता था वास्तव में कहा जा सकता है कि रंगभेद की नीति ने भारतीयों को जो कठिनाईयां एवं अपमान दिया उससे राष्ट्रीय संचेतना को अधिक बल मिला। इस संचेतना का विकास मध्यम वर्ग मजदूर, किसान, समाज के हर वर्ग में हूआ । अतः तत्कालीन भारतीय समाज में जो नीतियां ब्रिटिश सरकार ने अपनाई । धीरे – धीरे वही नीतियां भारतीयों में चेतना जाग्रत करने का कारण बनी। तथा अंग्रेजों द्वारा भारत में किए गए नए अविस्कार एवं मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा की नीति ने युवा वर्ग को एकजुट कर राष्ट्रीय चेतना के रूप में चिंगारी का काम किया।

संदर्भ –

1. अरविन्द कुमार पोरवाल , डॉ. संजय कुमार त्रिपाठी यूनिक भारतीय इतिहास, । पृष्ठ नं. 378
2. विपिन चन्द्रा, आधुनिक भारतीय इतिहास, । पृष्ठ नं 196
3. जी. एस. छावड़ा, आधुनिक भारतीय इतिहास एक प्रगत अध्ययन । पृष्ठ नं. 502
4. विपिन चन्द्रा, आधुनिक भारतीय इतिहास । पृष्ठ नं. 197
5. पत्र टारगेट टाइम्स अप्रेल 2016 अंक – 45, आधुनिक भारत पर सामान्य अध्ययन । पृष्ठ नं. 5
6. अरविन्द कुमार पोरवाल, डॉ. संजय कुमार त्रिपाठी यूनिक भारतीय इतिहास। पृष्ठ नं. 379